वार्तालाप नं.1245, सिहोर, तारीख–02.11.11
Disc.CD No.1245, dated 2.11.11 at Sehore
Extracts

समय–10.54–12.21
जिज्ञासु–बाबा, जो चित्र फट जाते हैं एडवान्स कैलेण्डर, उन चित्रों को तो फेंक नहीं सकते हैं। तो उनका क्या करें?
बाबा–क्यों नहीं फेंक सकते?
जिज्ञासु–उनपर बाबा के प्वाइन्ट लिखे रहते हैं।
बाबा–अरे, तुम कब तक नहीं फाड़ोगे? वो तो फटने ही है, सड़ने ही है। विनाश होगा तो सारी दुनिया की सभी चीजें फट जावेंगी, सड़ जावेंगी। ये तो भक्तिमार्ग की बातें हैं। जड़ चित्रों की पूजा करते रहते हैं। जड़ चित्रों को मान देते रहते हैं। और अभी प्रैक्टिकल में भगवान आया हुआ है तो कोई मान नहीं देते। भक्तिमार्ग की बातें यहाँ सब खलास होती हैं। चित्र तो जड़ है। हमको तो चैतन्य मिला हुआ है। तो चैतन्य की परवाह करनी चाहिए पहले या जड़ की परवाह करनी चाहिए? चैतन्य की परवाह पहले करनी है।

Time: 10.54-12.21
Student: Baba, the pictures that tear, for example, [the pictures of] the advance [party] in calendars, we certainly cannot throw them away. So, what should we do with them?
Baba: Why can't you throw them?
Student: Baba's points are written on them.
Baba: *Arey*, till when will you not tear them? They have to tear, rot anyway. When destruction takes place, all the things of the world will tear, they will rot. These are the beliefs of the path of *bhakti* (devotion). They keep worshipping non-living pictures. They give regard to non-living pictures. And when God has come in practice now, no one gives regard to Him. All the beliefs of the path of *bhakti* end here. Pictures are non-living. We have found the living One. So, should we first care for the living One or should we care for the non-living one? We should first care for the living One.

(समयः–00:12:23–00:13:08)
जिज्ञासु – बाबा याद और सेवा से माया को डबल लॉक लगाना है।
बाबा – हाँ, जी।
जिज्ञासु – माया तो याद में ही विघ्न डालती है।
बाबा – डालने दो। सेवा भी तो कर रहे हैं। सेवा जो बच्चे करते हैं उनको बाप याद करता है। तो सेवा करने से याद में भी बल मिलेगा कि नहीं मिलेगा? इसलिए बताया कि डबल लॉक लगा दो। जब याद में बल मिलेगा, याद कच्ची नहीं होगी तो माया भी थक जायेगी। इसलिए बोला डबल लॉक लगा दो।

Time: 12.23-13.08
Student: Baba, we should apply a double lock to Maya with remembrance and service.
Baba: Yes.
Student: Maya creates obstacles only in remembrance.
Baba: Let it create [obstacles]. You are doing service as well. The Father remembers the children who do service. So, will you get power in remembrance by doing service or not? This is why it was told that apply a *double lock*. When you get power in remembrance, when the remembrance is not weak, then Maya will also become tired. This is why it was said that you should apply a *double lock*.

Website: www.pbks.info
Email: a1spiritual1@gmail.com

(समयः–00:14:18–00:16:33)
जिज्ञासु – निःसंकल्पी स्टेज किस प्रकार बनाई जाये?
बाबा – प्रैक्टिस से बनाई जाये। ये दुनिया भस्म होने वाली है, इन आँखों से जो भी देखते हैं वो सब खलास होने वाला है तो आँखों में कोई समायेगा ही नहीं। कौन समायेगा? एक शिवबाबा ही समायेगा। आँखों से देखते हैं दुनिया को तो दुनिया याद आती है। दुनिया याद आती है तो बुद्धि भटक जाती है। याद इसलिए आती है कि दुनिया से वैराग नहीं आया है। राग छूटता नहीं है, दुनिया से सुख लेने की आस लगी हुई है। जब ये बुद्धि में बैठ जायेगा कि इस दुनिया से, दुनिया के पदार्थों से, इस दुनिया के सम्बन्धों से अब सुख नहीं मिलने वाला है; दुःख ही दुःख मिलने वाला है तो बुद्धियोग टूट जावेगा। बुद्धि में बैठेगा कि एक शिवबाबा ही सुखदाई है, वही अंत तक हमारा सहारा है और सब धोखा दे जावेंगे। जैसे यज्ञ के आदि में नजारा आया, ब्राह्मणों की छोटी सी दुनिया की शूटिंग हुई। जिनको प्यार में आकर के सात–2 तालों में अंदर रखा था। उनको बुद्धि में ये बैठ गया कि सात तालों में हमको बंद कर के रखने वाले सिर्फ दिखावा करते थे लेकिन जब बात आई, जान पर आई तो सब भाग गये छोड़–छाड़ करके। भगवान ने ही हमको बचाया।

Time: 14.18-16.33
Student: How should we attain a thought free stage?
Baba: You should attain it through *practice*. This world is going to be burnt to ashes. Whatever we see through these eyes is going to perish. Then nobody will settle in the eyes at all. Who will settle? Only one Shivbaba will settle. When we see the world through the eyes then it comes to our mind. When the world comes to the mind, the intellect wanders. It comes to the mind because you have not developed detachment for the world. You are unable to leave the attachment; there is a desire to obtain pleasure from the world. When this sits in the intellect : we are not going to get happiness from this world, from the things related to the world, from the relationships of this world now, when we are going to get sorrow and only sorrow, then the connection of the intellect will break. It will sit in the intellect that one Shivbaba alone is the Giver of Happiness; He alone is our support (*sahaaraa*) till the end; all the others will deceive us. For example, we saw a scene in the beginning of the *yagya*; the *shooting* (recording) of the small world of Brahmins took place. It sat in the intellect of those whom people had kept under seven locks due to love that those who kept them under seven locks were just showing off [their love], but when the situation came, when their life was at risk, all of them ran away leaving everything behind. God alone saved them.

(समयः–00:16:42–00:17:14)
जिज्ञासु – यज्ञ के आदि में जो राम बाप वाली आत्मा थी ना उसके साथ कितने सहयोगी बने थे?
बाबा – अभी पता नहीं पड़ा?
जिज्ञासु – माना राम बाप के साथ कितने सहयोगी यज्ञ छोड़ के गये थे?
बाबा – अभी तो पता पड़ गया ना कि ब्रह्मा को कितनी भुजायें होती है?
जिज्ञासु – हजार।
बाबा – हजार भुजायें होती हैं। तो हजार भुजायें आदि में भी रही होंगी जो अंत में भी प्रत्यक्ष होती हैं।

Time: 16.42-17.14
Student: How many people helped the soul of Father Ram in the beginning of the *yagya*?
Baba: Didn’t you still know?

Website: www.pbks.info
Email: a1spiritual1@gmail.com

Student: I mean to ask: How many helpers of Father Ram left the *yagya* with him?
Baba: You have come to know now, haven't you? - That how many arms Brahma has.
Student: One thousand.
Baba: He has one thousand arms. So, there will have been thousand arms in the beginning. They are revealed in the end as well.

(समयः–00:18:35–00:19:23)
जिज्ञासु – संकल्पों का हिसाब–किताब कैसे चुक्तु होगा?
बाबा – बिंदी रूप में टिक जाओ सब संकल्प कटते रहेंगे, फुल स्टॉप लगता रहेगा, संकल्प आना बंद हो जायेंगे। गाड़ी में ब्रेक लगाया जाता है ना, ट्रेन भी चलती है तो ब्रेक लगाते हैं ना। थोड़ी सी किर्र–2 की आवाज होगी थोड़ी देर फिर बंद हो जावेगी। प्रैक्टिस होगी, अच्छे से ग्रीस वगैरा लगा हुआ होगा तो वो भी नहीं होगा।

Time: 18.35-19.23
Student: How will the karmic accounts of thoughts be cleared?
Baba: Become constant in the form of the point; all the thoughts will gradually stop; a *full stop* will be applied [to them]; you will stop having thoughts. *Break* is applied to a vehicle, isn't it? When a train runs, a break is applied to it, isn't it? For some time it will make a creaking sound and then it will stop. If your *practice* is good, if the *grease* is applied well, then even that sound will stop.

(समयः–00:19:29–00:21:41)
जिज्ञासु – बाबा, बेसिक में कोई मुखिया नहीं है।...ब्रह्माकुमारियाँ चला रही हैं।
बाबा– ब्रह्माकुमारिया मुखिया नहीं हुई?
जिज्ञासु– जैसे यहाँ आप हो। हम सबके रक्षक हो लेकिन वहाँ पे तो नहीं है ना कोई। ब्रह्माबाबा का शरीर छूट गया ना।
बाबा – यहाँ कौन बाप मुखिया बन के, रक्षक बन के आया हुआ है? फर्रूखाबाद में अभी इतना गड़बड़ हुआ तो क्या बाप ने वहाँ जाकर रक्षा की? यहाँ भी तो शक्तियाँ ही हैं। जैसे वहाँ शक्तियाँ हैं वैसे यहाँ भी शक्तियाँ हैं। वहाँ भी शिव शक्ति पाण्डव सेना गाये हुए थे। अभी बाप वहाँ नहीं है। तो जहाँ बाप है वहाँ शिव शक्तियाँ शक्ति रूप बन जाती हैं। बाप तो गुप्त रहता है। महाभारत में भी रणछोड़ गाया हुआ है। युद्ध के मैदान में सामने आता है क्या? नहीं आता।

Time: 19.29-21.41
Student: Baba, there is no head among the people of the basic knowledge. …The Brahmakumaris are managing the affairs there.
Baba: Aren't the Brahmakumaris the heads?
Student: For example, you are here. You are the protector for all of us; there is no one like this there; Brahma Baba left his body, didn't he?
Baba: Here, which Father has come as a head, as a protector? So much disturbance took place now in Farrukhabad; so, did the Father go and give protection there?
Even here there are the *shaktis* themselves. Just as there are *shaktis* there, there are *shaktis* here, too. *Shivshakti Pandav Sena* (Shivshakti Pandava army) was famous there as well. Now, the Father is not present there. So, where there is the Father the *shivshaktis*[1] become

[1] Consorts of Shiva

form of *shakti* (power). The Father remains hidden. Even in the Mahabharata He is famous as Ranchod[2]. Does He come in the front in the battlefield?
Student: No.
Baba: He doesn't come.

जिज्ञासु – नहीं मेरा मतलब ये है कि वहाँ लाईन बना के बैठते हैं सभी लोग लेकिन यहाँ पे सब अच्छे से नहीं बैठ पाते हैं।
बाबा – अच्छे से नहीं बैठे? फैल–फूल के, टांग फैलाकर बैठना है?
जिज्ञासु – लाईन बनाकर नहीं बैठते ना।
बाबा – लाईन बना के? ये परिवार है या स्कूल है? या परिवार और स्कूल दोनों है?
जिज्ञासु – दोनों है।
बाबा – दोनों है। इसमें आप टांग फैलाकर बैठना चाहो, बैठ जाओ। आ जाओ। कोई कुछ नहीं कहेगा।

Student: No, I mean to say that everyone sits in a line [there], but here all are not able to sit properly.
Baba: Are you not sitting properly? Do you want to sit with your legs stretched out?
Student: They don't sit in a line, do they?
Baba: In a line/row? Is this a family or a school? Or is it both a family as well as a school?
Student: It is both.
Baba: It is both. You can sit with your legs spread out if you wish. Come. Nobody will say anything.

(समयः–00:21:49–00:23:36)
प्रश्न – अष्टदेव चार सूर्यवंशी, चार चंद्रवंशी मणके हैं, बाबा ने बोला है। तो चंद्रवंशी विजयमाला से तो नहीं आवेंगे।
बबा–ये कहां बोला ? विजयमाला तो अभी बनी ही नहीं है लेकिन चंद्रवंश तो है। चंद्रवंश है या नहीं है? चंद्रमा था या नहीं था? चंद्रमा था तो उसका वंश भी चला आ रहा है। चंद्रवंशी हैं। तो चार चंद्रवंशियों से उठाये जाते हैं और चार सूर्यवंशियों से उठाया जाते हैं । चार जोड़े बनते हैं। इस तरह ये अष्टदेव कहे गये हैं। ऐसे नहीं कि रूद्रमाला से ही होना चाहिए। रूद्रमाला में तो सभी वंशों के हैं। ऐसे नहीं कि रूद्रमाला के बीजरूप मणके सारे के सारे सूर्यवंशी हैं और सूर्यवंशी ही बनकर के रहेंगे। नहीं। अंत में जाकर के कुट– पिट के अच्छी तरह से जब छिलका उतर जायेगा तो सब सूर्यवंशी बन जायेंगे। तब तक तो मालायें सारी प्रत्यक्ष हो जायेंगी क्योंकि सारी दुनिया रूद्रमाला है। तो सारी दुनिया के जो बीज हैं वो भी रूद्रमाला में हैं।

Time: 21.49-23.36
Question: Baba has said that among the eight deities, four beads are *Suryavanshis*[3] and four beads are *Chandravanshis*[4]. So, the *Chandravanshis* will not come from the *Vijaymala* (rosary of victory).
Baba: Where was this said? The *Vijaymala* has not yet been formed. But the *Chandravansh* (the Moon dynasty) does exist. Does the *Chandravansh* exist or not? Was there *chandrama* (the Moon, i.e. Brahma) or not? There was the Moon; so his dynasty also continues. There

[2] The one who flees from battle; a title of Krishna
[3] Those who belong to the Sun dynasty
[4] Those who belong to the Moon dynasty

Website: www.pbks.info
Email: a1spiritual1@gmail.com

are the *Chandravanshis*. So, four are taken from the *Chandravanshis* and four from the *Suryavanshis*. Four couples are formed. In this way they are called the eight deities. It is not that they should be only from the *Rudramala*[5] . *Rudramala* includes [souls] from all the dynasties. It is not that all the seed form beads of the *Rudramala* are *Suryavanshis* and they will remain just *Suryavanshis.* No. In the end, when the peel will come off completely through beating and pounding, then everyone will become *Suryavanshis.* Until then all the rosaries will be revealed because the entire world is *Rudramala*. So, the seeds of the entire world are also in the *Rudramala*.

(समयः–00:23:42–00:24:26)
जिज्ञासु – बाबा, यहाँ नर्क की दुनिया के बीच में स्वर्ग स्थापना होगा। वहाँ माया रावण और मायावी संकल्प भी प्रवेश नहीं कर पायेंगे। माया तो बाप की बेटी है, तो वहाँ भी आयेगी।
बाबा – बाप की बेटी है ना; विष्णु की बेटी तो नहीं है। वहाँ विष्णु का राज्य होगा या बाप का राज्य होगा? बाप राज्य करता है? बाप राज्य करता है? शंकर को स्वर्ग में दिखाया गया है?
जिज्ञासु – नहीं।
बाबा – नहीं दिखाते; इन्द्र को स्वर्ग में दिखाते हैं। शंकर तो लंगोटिया है।

Time: 23.42-24.26
Student: Baba, heaven will be established here in the midst of the world of hell. There Maya Ravan and *mayavi* (illusive) thoughts will not be able to come. Maya is the Father's daughter, so she will come there as well.
Baba: She is the Father's daughter, isn't she? She is not the daughter of Vishnu. Will there be the kingdom of Vishnu there or will there be the Father's kingdom? Does the Father rule? Does the Father rule? Has Shankar been shown in heaven?
Student: No.
Baba: He isn't shown. Indra is shown in heaven. Shankar is a *langotiaa*[6] .

(समयः–00:30:10–00:31:23)
जिज्ञासु – बाबा, शंकर को हनुमान का अवतार मानते हैं।
बाबा – हनुमान का अवतार नहीं मानते। हनुमान को शंकर का रूद्र अवतार मानते हैं।
जिज्ञासु – बाबा, फिर ब्रह्मा की सोल का हनुमान का पार्ट है।
बाबा – तीनों आत्मायें मिलकर के शंकर का रूप हैं – ब्रह्मा, शिव और रामवाली आत्मा। उसमें भी सूक्ष्म शरीरधारी कौन है अभी?
जिज्ञासु – ब्रह्मा।
बाबा – ब्रह्मा। तो ब्रह्मा को शंकर तो कह सकते हैं लेकिन प्रजापिता नहीं कह सकते। क्यों? प्रजापिता प्रजा के साथ होगा या सूक्ष्मवतन में होगा?(जिज्ञासु ने कुछ कहा।) हाँ, तो ब्रह्मा का पार्ट हनुमान का पार्ट भी है। सूक्ष्म शरीरधारी पार्ट है, ज्यादा पॉवरफुल पार्ट है।

Time: 30.10-31.23
Student: Baba, Shankar is considered to be an incarnation of Hanuman.
Baba: He is not considered to be the incarnation of Hanuman. Hanuman is considered to be the Rudra incarnation of Shankar.
Student: Baba, then the soul of Brahma itself plays the part of Hanuman.

---
[5] Rosary of Rudra
[6] Lit. the one with only a loin cloth; a beggar

Website: www.pbks.info
Email: a1spiritual1@gmail.com

Baba: All the three souls together constitute the form of Shankar: The soul of Brahma, Shiva and Ram. Even among them who has a subtle body now?
Student: Brahma.
Baba: Brahma. So, Brahma can be called Shankar, but he cannot be called Prajapita. Why? Will Prajapita be with *prajaa* (subjects) or will he be in the subtle world? Yes, so, Brahma's *part* is a *part* of Hanuman as well. His is a subtle bodied *part*; it is a more *powerful part*.

(समयः–00:31:29–00:34:46)
प्रश्न – बाबा ने कहा है मुसलमान धर्म की आधारमूर्त आत्मा बाबा को बेसिक ज्ञान देने के निमित्त बनी। तो क्या वो आत्मा ने अभी तक भी एडवान्स ज्ञान नहीं उठाया? वो आत्मा कौन है? क्या इशारा दे सकते हैं?
बबा–अच्छा, बाबा कौन है? रामवाली आत्मा है, कृष्णवाली आत्मा है या कोई धर्मपिता का आधारमूर्त है? बाबा जिसे कहते हैं शिवबाबा। शिव माना आत्मा, बाबा माना शरीर, शरीरधारी। तो बाबा कौन है राम है, कृष्ण है या धर्मपिताओं की कोई आधारमूर्त आत्मा है?
जिज्ञासु – राम।
बाबा – रामवाली आत्मा है। तो झाड़ के चित्र को ध्यान से देखो। मुसलमान धर्म जहाँ पर है, डाली निकली हुई है, मोहम्मद दिखाया हुआ है जहाँ पर उसके मुख के सामने रामवाली आत्मा धनुष बाण लिये खड़ी है। इससे साबित होता है कि हमारे बड़े ते बड़े दुश्मन कौन हैं? मुसलमान हमारे पुराने दुश्मन हैं। जब से ये मुसलमान भारत में आये हैं तब से भारत परतंत्र हुआ है, मुसलमानों के आक्रमण जब से शुरू हुए हैं तब से कलियुग पापी युग शुरू हो गया भारतवर्ष में। जो ब्राह्मण देवतायें थे वो शूद्र बन गये संग के रंग से। तो जिन्होंने हमको शूद्र, अज्ञानी बनाया वही निमित्त बनते हैं ज्ञान देने के। विदेशी पहले ज्ञान को पहचानते हैं या स्वदेशी पहले ज्ञान को पहचानते हैं? कौन पहचानते हैं? विदेशी पहचानते हैं। तो मुस्लिम धर्म की जो आधारमूर्त आत्मा है जो मोहम्मद के रूप में दिखाई गई है वो निमित्त बनती है रामवाली आत्मा को संदेश देने के लिए।

Time: 31.29-34.46
Question: Baba has said that the root (*aadhaarmuurt*) soul of the Muslim religion became instrument to give *basic knowledge* to Baba. So, hasn't that soul grasped the advanced knowledge yet? Who is that soul? Can you give a hint?
Baba: *Acchaa*, who is Baba? Is it the soul of Ram, the soul of Krishna or is it the root soul of some religious father? Baba, who is called Shivbaba … Shiva means soul; baba means the body, the bodily being. So, who is Baba? Is it Ram, is it Krishna or is it the root soul of some religious father?
Student: Ram.
Baba: It is the soul of Ram. So, look at the picture of the Tree carefully. The place where the Muslim religion is shown, the place where its branch has emerged, the place where Mohammed has been shown, the soul of Ram is standing with bows and arrows in front of his face. It proves that who are our biggest enemies? The Muslims are our old enemies. Ever since these Muslims have come in India, it has become a slave; ever since the attacks of Muslims have started, the Iron Age, the sinful age has started in the land of India. The Brahmins who were deities became Shudras[7] through the colour of the company. So, those who made us Shudra, ignorant become instrument in giving knowledge. Do the foreigners recognize the knowledge first or do the *swadeshis*[8] recognize the knowledge first? Who recognize [first]? The foreigners recognize. So, the *aadhaarmuurt* soul of the Muslim

[7] Member of the fourth and the lowest division in the Indo-Aryan society
[8] Those who belong to the country India

Website: www.pbks.info
Email: a1spiritual1@gmail.com

religion, who has been shown in the form of Mohammed becomes instrument in giving message to the soul of Ram.

(समयः–00:36:18–00:38:05)
जिज्ञासु – जो संगमयुग में झुकते हैं उतना वो झुकाने के निमित्त बनते हैं।
बाबा – ठीक है।
जिज्ञासु – लेकिन बाबा ये बोला है कि सूर्यवंशी बच्चे किसी के सामने झुकेंगे नहीं।
बाबा – ये कहां बताया? झुकेंगे नहीं का मतलब ये थोड़े ही है कि अपने परिवार के सामने झुककर के नहीं चलना है। अपने परिवार में सहन करना है या सामना करना है? ये भी तो देखना है कहाँ सहन करना है और कहाँ सामना करना है। अपने धर्म की, अपने परिवार के लोगों की स्थापना करनी है या उनका विनाश करना है? स्थापना करनी है। तो जिनकी स्थापना का लक्ष्य है तो माँ को लक्ष्य रहता है कि अपने परिवार को वर्धन करना है, बढ़ाना है, पालना करनी है। तो माँ सहन करती है तब होता है। ऐसे ही हम भी ब्रह्मा बनकर के उनकी पालना करे, ब्रह्मा बनकर के सहनशक्ति धारण करें तब ये परिवार स्थापन होगा, तब ब्राह्मण सो देवता बनेंगे। हाँ, जो और धर्म हैं, और धर्मवाले हैं उनको नहीं पनपने देना है। उनके सिद्धान्तों को अगर हम पनपने देंगे तो ये दुनिया नर्क ही बनी रहेगी। उनका मुकाबला करना है। मुकाबला करने का मतलब ये नहीं हिंसा करनी है; उनके बोले गये प्वाइन्टस को स्वीकार नहीं करना है।

Time: 36.18-38.05
Student: Those who bow in the Confluence Age become instruments in making others bow.
Baba: It is correct.
Student: But Baba it has been said that the *Suryavanshi* children will not bow before anyone.
Baba: Where was this said? 'Will not bow' does not mean that you should not pay homage to your family. Do you have to tolerate or confront in your family? You should also decide where to tolerate and where to confront. Should you establish your religion, the members of your family or should you destroy them? You have to establish. So, when the aim is to establish, then… a mother aims to promote, increase, sustain her family. So, it happens only when the mother tolerates. Similarly, we too should sustain them by becoming Brahma, we should assimilate the power of tolerance by becoming Brahma; then this family will be established; then we will change from Brahmins to deities. Yes, we should not allow the other religions, the people of the other religions to prosper. If we allow their principles to prosper, then this world will continue to be a hell. We should confront them. To confront does not mean that we should indulge in violence; we shouldn't accept the *points* spoken by them.

(समयः–00:38:59–00:40:42)
प्रश्न – एक रामा तुलसी, एक श्यामा तुलसी। श्याम तुलसी के पत्ते गर्मियों में झड़ जाते हैं और राम तुलसी के पत्ते भी झड़ते तो हैं परंतु नये–2 हरे पत्ते भी उसी समय निकलते भी हैं। पुराने पत्ते झड़ते हैं और साथ ही नई छोटी–2 पत्तियाँ, कलियाँ निकलती भी हैं। इसका क्या मतलब है?
बबा–इसका मतलब ये है कि जो श्यामा तुलसी है वो बिल्कुल टूट जाती है ज्ञान में से और बाल–बच्चे भी उसके पैदा नहीं होते। और जो रामा तुलसी है जगदम्बा वो झड़ती तो है, ज्ञान में से टूटती तो है लेकिन छोटी–2 बच्चियाँ ढ़ेर सारी पैदा होती रहती हैं। जगदम्बा की भुजायें अभी पैदा हो रही कि नहीं हो रही है?
जिज्ञासु – हो रही है।

बाबा – रूद्रमाला में जगदम्बा की भुजायें पैदा हो रही हैं या विजयमाला की भुजायें पैदा हो रही हैं? जगदम्बा की भुजायें पैदा हो रही हैं। तो श्याम तुलसी के पत्ते नहीं निकलते हैं; झड़ जाते हैं, सूख जाती है और रामा तुलसी के पत्ते निकलते रहते हैं, निकलना बंद नहीं होते।

Time: 38.59-40.42
Question: One is *Rama* (green) *Tulsi* and the other is *Shyama* (dark) *Tulsi*. The leaves of the *Shyam Tulsi* fall in the summers and the leaves of the Ram Tulsi also fall, but the new, green leaves also grow at the same time. The old leaves fall and simultaneously the new, small leaves, buds grow. What does it mean?
Baba: It means that the *Shyama Tulsi* breaks from the knowledge completely and she does not give birth to children either. And the *Rama Tulsi*, i.e. Jagdamba does fall, she does break from the knowledge, but numerous small daughters continue to be born. Are the arms of Jagdamba having birth now or not?
Student: They are.
Baba: Are the arms of Jagdamba being born in the *Rudramala* or are the arms of *Vijaymala* being born? The arms of Jagdamba are being born. So, the leaves of *Shyam Tulsi* do not grow; they fall; they dry and the leaves of the *Rama Tulsi* keep on growing; they do not stop growing.

(समयः–00:42:30–00:43:42)
जिज्ञासु – बाबा, अपकारियों पर भी उपकार करना है, नहीं तो बहुत सज़ा खायेंगे।
बाबा – ठीक है।
जिज्ञासु – जैसे बी.के बहनजी ने बोला हैः हमारी जहां क्लास होती है वहां नहीं आना। हाथ जोड़ के निवेदन करती है।
बाबा – ठीक है।
जिज्ञासु – तो कैसे उपकार किया जाये?
बाबा – अच्छा, मन्सा से उनका उपकार नहीं कर सकते? मन्सा से उनके लिए शुभभावना, शुभकामना नहीं कर सकते? जब सूर्यवंशी हैं तो विश्व कल्याणकारी हैं या सिर्फ सूर्यवंशियों के ही कल्याणकारी हैं?
जिज्ञासु – विश्व कल्याणकारी।
बाबा – सारे विश्व के पिता हैं ना, सारे विश्व की बीजरूप आत्मायें हैं ना, सारे विश्व के पूर्वज हैं ना। तो जो पूर्वज होते हैं वो अपनी सारी वंशावली के प्रति शुभभावना, शुभकामना रखते हैं। जो पूर्वज नहीं होते हैं, बाद की पीढ़ियों की पैदाईश हैं वो आपस में लड़ते–झगड़ते है। उनमें शुभभावना, शुभकामना नहीं आती है। क्षुद्रवंशी कहे जाते हैं।

Time: 42.30-43.42
Student: Baba, we have to show kindness to even the harmful ones; otherwise, we will suffer a lot of punishments.
Baba: It is correct.
Student: For example, the BK sister told us: Don't come to our class. She pleads with folded hands.
Baba: Alright.
Student: So, how should we show kindness to them?
Baba: *Acchaa*, can't you show them kindness through your mind? Can't you have good feelings, good wishes for them through the mind? When you are *Suryavanshis*, are you world benefactors or are you the benefactors for only the *Suryavanshis*?

Student: We are world benefactors.
Baba: You are the fathers of the entire world, aren't you? You are the seed form souls of the entire world, aren't you? You are ancestors of the entire world, aren't you? So, those who are ancestors have good feelings, good desires for their entire geneology. Those who are not ancestors, those who are born of the later generations, they keep on fighting with each other. They do not have good feelings, good wishes. They are called *Kshudravanshis*[9].

(समयः–00:43:55–00:45:53)
जिज्ञासु – कछुये और खरगोश की रेस में कछुआ जीत जाता है। खरगोश हार जाता है। जबकि खरगोश फास्ट दौड़ता है फिर भी कछुआ जीत जाता है।
बाबा – हाँ।
जिज्ञासु – इसका अर्थ क्या है?
बाबा – खरगोश जो है वो तेज़ दौड़ता है और हाईजम्प भी लम्बी–2 लगाता है और कछुआ न तेज़ दौड़ता है और ना हाईजम्प तेज़ लगाता है। लेकिन उसमें क्या विशेषता होती है? कुछ विशेषता होती है कि नहीं? क्या?
जिज्ञासु – निरन्तर ...
बाबा – नहीं। उसमें विशेषता होती है इन्द्रियों को समटने की। जब माया का आक्रमण होता है तो इन्द्रियों को समेट लेता है। तो ऐसे ही रूद्रमाला की जो रानी मक्खी है अथवा विजयमाला की जो रानी मक्खी है वो पवित्रता में सबसे आगे जाती है लेकिन याद की दौड़ में तीखी नहीं है। क्यों? क्योंकि बाप का पूरा परिचय नहीं मिला है। परिचय पूरा न होने के कारण पूरा निश्चय बुद्धि नहीं होती है इसलिए तेज़ चाल नहीं है, दौड़ नहीं है लेकिन प्योरिटी की पॉवर के आधार पर निरन्तर खुशी में रहती है। अंदरूनी खुशी हैं इसलिए जीत हो जाती है।

Time: 43.55-45.53
Student: In the race between the tortoise and the hare the tortoise wins. The hare is defeated. Even though the hare runs fast, the tortoise wins.
Baba: Yes.
Student: What does it mean?
Baba: The hare runs fast and also takes a high jump and the tortoise neither runs fast nor takes a fast high jump. But what is its specialty? Does it have any specialty or not? What?
Student: Continous…
Baba: No. It has the specialty of withdrawing its *indriyaan*[10]. When Maya attacks, it withdraws the *indriyaan*. So, similarly, the queen bee of the *Rudramala* or the queen bee of the *Vijaymala* goes ahead of everyone in purity, but she is not fast in the race of remembrance. Why? It is because she hasn't received the complete introduction of the Father. As she does not have the complete introduction, she does not have complete faith; this is why she does not walk fast, run fast, but on the basis of the *power* of *purity*, she remains in joy continuously. There is inner happiness; this is why she wins.

(समयः–00:50:23–00:51:54)
प्रश्न – भक्तिमार्ग में ऐसा मानते हैं कि हिचकियाँ जब आती हैं तो कोई याद करता है। तो बाबा जब हम आपको याद करते हैं तो आपको भी हिचकियाँ आती है क्या?
बबा–अच्छा, जिसने ये प्रश्न किया है वो पहले एक प्रश्न का जवाब दे कि जिसको याद करते हैं आप, वो साकार बाबा को याद करते है या निराकारी बाबा को याद करते है? कौनसी

[9] Those who belong to the Shudra clan
[10] Parts of the body used to perform actions and the sense organs

आत्मा को याद करते हैं? भुट्टू आत्मा को याद करते हैं कि भगवान आत्मा को याद करते हैं? अरे, कौनसी आत्मा को... याद करना आत्मा का काम है कि देह का काम है?
जिज्ञासु – आत्मा।
बाबा – आत्मा का काम है। तो कौनसी आत्मा को याद करते हैं?
जिज्ञासु – साकार में निराकार।
बाबा – साकार में निराकार, निराकार को याद करते हैं; साकार को याद नहीं करते। साकार में निराकार को याद करते हैं। तो जिसको याद करते हैं उसको हिचकियाँ आने का सवाल हो सकता है? उसको कैसे होगा?

Time: 50.23-51.54
Student: It is believed in the path of *bhakti* that when someone remembers us, we get hiccups. So Baba, when we remember you, do even you get hiccups?
Baba: *Acchaa*, the one who has raised this question should first reply to a question that the one whom you remember, do you remember the corporeal Baba or the incorporeal Baba? Which soul do you remember? Do you remember the *bhuttu* (foolish) soul or the soul of God? *Arey*, which soul? Is it the task of the soul or the task of the body to remember?
Student: The soul.
Baba: It is the task of the soul. So, which soul do you remember?
Student: Incorporeal One within the corporeal one.
Baba: Incorporeal One within the corporeal one. You remember the incorporeal One, not the corporeal one. You remember the incorporeal One **within** the corporeal one. So, the one whom you remember, can there be a question of Him getting hiccups? How can He get [hiccups]?

(समयः–00:53:30–00:54:35)
जिज्ञासु – सतयुग में हाईट कितनी होती है देवताओं की? लम्बाई।
बाबा – उतनी लम्बाई होती है जितनी यहाँ सामान्य मनुष्य की भारत में लम्बाई होती है। जो देह अभिमानी होते हैं धर्म वो लम्बे–चौड़े होते हैं क्योंकि उनकी आत्मा में देहभान भरा हुआ रहता है। जो आत्माभिमानी हैं जन्म–जन्मान्तर के वो ज्यादा लम्बे–चौड़े कैसे होंगे? वो तो अपने धर्म के पक्के होते हैं। अपना धर्म सबसे बड़ा धर्म है आत्मिक स्थिति में रहना। स्वधर्मे निधनं श्रेयः। स्वधर्म क्या है? आत्मा का धर्म ही सबसे बड़ा धर्म है। तो जो आत्मिक स्थिति में रहता है उनके शरीर बहुत लम्बे–चौड़े नहीं होते हैं; सामान्य ही होते हैं।

Time: 53.30-54.35
Student: What is the height of the deities in the Golden Age? The height.
Baba: The height is same as the height of an ordinary human being here, in India. Those who belong to the body conscious religions are tall and sturdy because their soul is full of body consciousness. How can those who are body conscious for many births be very tall and sturdy? They are firm in their religion. Our religion, the greatest religion is to be in the soul conscious stage. *Swadharme nidhanam shreyah*[11]. What is *swadharm* (religion of the soul)? The religion of the soul itself is the greatest religion. So, the body of the one who remains in soul conscious stage is not very tall and sturdy; it is just ordinary.

(समयः–00:55:33–00:57:30)

---

[11] It is better to die in one's own religion

प्रश्न – किसी ने पूछा है– मुरली में बोला है रूद्रमाला के मणके आत्मिक सुख भोगने वाले हैं और विजयमाला के मणके देह का सुख भोगने वाले हैं। तो बाबा रूद्रमाला के मणके आत्मिक सुख भोगने वाले हैं तो उनको जन्म–जन्मान्तर का पतित कैसे कहेंगे?
बाबा– जन्म–जन्मान्तर के पतित कैसे हुए? 63 जन्म में पतितपना होता है या जन्म–जन्मान्तर पतितपना होता है? 63 जन्म पतितपना कहेंगे बाकी जन्म–जन्मान्तर पतितपना तो होता नहीं। बाकी रही आत्मिक सुख की बात, तो कोई आत्मायें महलों में रहकर सुख भोगना पसंद करती है; उनको मारामारी पसंद नहीं और कुछ आत्मायें ऐसी होती है जो महलों में बैठकर के सुख भोगना पसंद नहीं करती। अपने देश की रक्षा में शरीर भी चला जाये, प्राण भी छूट जाये तो भी अंत समय में उनको सुख ही होता है और सुखी घर में जाकर के जन्म लेती है। अंत मते सो गते हो जाती है। इस तरह कहा जाता है कि वो आत्मिक सुख भोगते हैं; देह की सुख की परवाह नहीं रहती है। जिनको देह के सुख की परवाह रहती है उनको अधीन होकर के रानी बनना पड़ता है और जो देह की सुख की भी परवाह नहीं करते वो राजा बनकर रहते हैं, स्वाधीन होकर के रहते है, किसी के भी अधीन बनकर के रहना उनको पसंद नहीं है। इसलिए ये अंतर पड़ता है।

Time: 55.33-57.30
Question: Someone has asked, it has been said in the murli that the beads of the *Rudramala* enjoy the spiritual happiness of the soul and the beads of the *Vijaymala* enjoy the happiness of the body. So Baba, when the beads of the *Rudramala* enjoy the spiritual happiness, how can they be called sinful for many births?
Baba: How can they be sinful for many births? Is there sinfulness in the 63 births or is there sinfulness in every birth? There will be said to be sinfulness for 63 births; but there isn't sinfulness in every birth. As regards the spiritual happiness, some souls like to enjoy happiness while living in palaces; they do not like fights and some souls are such that they do not like to enjoy happiness sitting in the palaces. Even if they lose their body, even if they lose their life in the defence of their country, still they experience only happiness in the end and they are born in a prosperous family. As are their thoughts in the end so is the destination they reach (*ant mate so gati*). In this manner it is said that they enjoy spiritual happiness; they do not care about the physical hapipness. Those who care for the physical happiness have to remain subordinate and become queens and those who do not care even for the physical happiness become kings, they remain independent (*swaadhiin)*; they do not like being under anyone. This is why this difference occurs.

(समयः–00:57:52–00:59:42)
जिज्ञासु – सूर्यवंशी सतयुग में रहते हैं, चंद्रवंशी त्रेता में। तो जिनको संदेश दिया वो कौनसे स्वर्ग में आयेंगे? राजा के वंश या प्रजा के वंश में?
बाबा – जो सिर्फ सुन लेते हैं लेकिन आगे नहीं बढ़ते... तो जो सुन लेते हैं उन सुनने वालों में अनेक धर्मों की प्रजा है। आठ नारायण है वो एक धर्म के हैं या अलग–2 धर्मों में कनवर्ट होने वाले हैं?
जिज्ञासु – अलग–2 धर्मों में।
बाबा – तो आठों नारायण की जो भी प्रजा है वो सारी प्रजा संदेश लेती है और संदेश लेकर के चली जाती है प्रजावर्ग में।
जिज्ञासु – कौनसे वर्ग में?
बाबा – कोई में भी। जैसे उनके आचरण होंगे प्रजावर्ग में जाकर के वैसे ही बनेंगे।

Time: 57.52-59.42

Student: The *Suryavanshi* live in the Golden Age; the *Chandravanshi* live in the Sivler Age. So, in which heaven will those who have been given the message come? Will they come in the dynasty of kings or the dynasty of subjects?
Baba: Those who just listen but do not make progress… so, among the listeners there are subjects of many religions. There are the eight Narayans; do they belong to one religion or do they *convert* to different religions?
Student: To different religions.
Baba: So, all the subjects of all the eight Narayans take the message and after obtaining the message they go to the subjects' category.
Student: In which category?
Baba: In any of them. As is their behavior so shall they become as subjects.

जिज्ञासु – तो क्या बाबा वो 84 जन्म ले सकते हैं?
बाबा – हाँ, 84 जन्म भी (ले सकते हैं।) ब्रह्मा जैसे होंगे सुनकर के चले जाते हैं, मानते नहीं, रेग्युलर स्टुडेन्ट बनते नहीं फिर ब्रह्माकुमार के ब्रह्माकुमार ही, तो 84 जन्म लेंगे कि नहीं लेंगे?
जिज्ञासु – वो तो चंद्रवंशी में भी तो श्रेष्ठ वंश है... दुनिया वालों में।
बाबा – दुनिया वाले जो चंद्रवंशी हैं उनमें वो इसलिए श्रेष्ठ हुए क्योंकि वो साढ़े चार लाख के आगे जो नम्बर नौ लाख तक का उस पोस्ट में आ जाते हैं इसलिए श्रेष्ठ हो गये। है तो प्रजा ही। दूसरे नम्बर की प्रजा है ना। संगमयुगी पहले नम्बर की प्रजा थोड़े ही है। जो संगमयुगी पहले नम्बर की प्रजा होगी वो तो यहीं प्रजा बन जावेंगे। यहीं सुख का अनुभव करेंगे, स्वर्गीय सुख का इसी जीवन में।

Student: So, Baba can they have 84 births?
Baba: Yes, [they can also have] 84 births. Those who are like Brahma; those who listen and depart, who do not accept, who do not become *regular students*, then they remain just Brahmakumars. So will they have 84 births or not?
Student: They belong to an elevated dynasty among the Moon dynasty… in the world.
Baba: Among the worldy *Chandravanshi* they are elevated because they are the one who achieve the post which is after four and a half lakh (450 thousand) and up to nine lakh (900 thousand). They are just subjects. They are the No.2 subjects, aren't they? They are not the No.1 Confluence Age subjects. The Confluence Age No.1 subjects will become subjects here itself. They will experience happiness here itself; [they will enjoy] heavenly joy in this very life.

(समयः–01:00:33–01:01:35)
प्रश्न – अष्टदेवों को सूर्यवंशी कहा जाता है लेकिन विजयमाला तो चंद्रवंशी है ना तो वो अष्टदेव में कैसे आयेंगे?
बाबा– जैसे कन्यायें नीचे कुल की होती है, नीची कोटि के ब्राह्मण होते हैं उनकी बच्चियाँ बनती हैं फिर ऊँचे कुल वाले ब्राह्मण के साथ उनकी शादी हो जाती है तो ऊँच कुल का ही गोत्र उनका माना जाता है। क्षत्रिय वंश की कन्या हो और ब्राह्मणों में शादी हो जाये तो वो ब्राह्मण ही कही जाती है। ऐसे ही जो भी चंद्रवंशी कन्यायें हैं जब अष्टदेवों के साथ वरण करेंगी तो वो भी सूर्यवंशी कही जावेंगी। जैसा संग वैसा ही उनको रंग लग जावेगा।

Time: 01.00.33-01.01.35
Questoin: The eight deities are called *Suryavanshi*, but the *Vijaymala* are *Chandravanshi*, aren't they? So, how will they come in the eight deities?

Baba: For example, virgins belong to a low clan; they become daughters of the Brahmins from a lowclan; then they are married to the Brahmins from a high clan; so, they are considered to belong to the category of a high clan. If there is a virgin of the *Kshatriya* clan (warrior class) and she is married to a Brahmin, then she is called a Brahmin. Similarly, when *Chandravanshi* virgins marry the eight deities, they will be called *Suryavanshis*, too. As is their company so shall be the colour that is applied to them.

(समयः–01:01:36–01:05:05)
जिज्ञासु – बाबा जो भी भक्तिमार्ग की परम्परायें हैं वो संगमयुग के हैं...। तो बाबा जैसे गुरूवार को लोग न सर धोते हैं, न बाल धोते हैं, न नाखून वगैरा काटते हैं तो इसकी शूटिंग कैसी होती है ब्राह्मणों की दुनिया में?
बाबा – नाखून और जो बाल हैं वो गंदे खून से बनते हैं या अच्छे खून से बनते हैं? नाखून जो बनते हैं वो गंदे खून से बनते हैं या अच्छे खून से बनते हैं? गंदा खून होता है। जैसे पसीना वगैरा निकलता है तो जो गंदगी है वो बाहर निकलती है। उस गंदगी को सद्गुरूवार के दिन नहीं निकालते हैं। अभी हमारे ऊपर सद्गुरू की दशा है तो हम भी विकारों में जाकर शरीर से गंदगी न निकालें तो अच्छी बात है।
जिज्ञासु – बेहद में?
बाबा – बेहद में ही तो है ये। अरे, विकारी बनते हैं तो गंदगी निकलती है कि नहीं शरीर से? निकलती है। शक्ति क्षीण होती है या नहीं क्षीण होती है? जो भी खून निकला वो नाली में जाता है, गंदगी बनता है या शुद्ध खून बनता है? हमारे काम आता है, काम की चीज़ है क्या? नहीं। बच्चे भी अगर पैदा होंगे तो भी बिच्छू–टिडंन पैदा होंगे। तो बिच्छू टिंडन हमारे काम की चीज़ है क्या? तो जैसे वो नाखून हैं दुःख देने वाले, बाल हैं विकारीपने की यादगार। क्या?
जिज्ञासु – हद में ये सब मानना चाहिए कि नहीं?
बाबा – क्या हद में?
जिज्ञासु – बाल धोना, नाखून काटना।

Time: 01.01.36-01.05.05
Student: Baba, all the traditions of the path of *bhakti* pertain to the Confluence Age... So Baba, for example, people do not wash their hair on Thursdays, they do not cut their nails, etc. So, how does its shooting take place in the world of Brahmins?
Baba: Are nails and hair formed from impure blood or pure blood? Are nails formed from impure blood or pure blood? It is impure blood. For example, we sweat, etc. So, the dirt comes out. That dirt is not removed on Thursday (*Sadguruvaar*). Now we are under the influence of the *Sadguru*; so it is good if we do not bring out the dirt [from our body] by indulging in vices.
Student: In the unlimited?
Baba: This is already in the unlimited. *Arey*, when we become vicious then does dirt come out from the body or not? It comes out. Do you lose vigour or not? All the blood that comes out, does it go into drain, does it turn into dirt or does it turn into pure blood? Does it prove useful for us? Is it a useful thing? No. Even if children are born, they will be like scorpions and spiders. So, are scorpions and spiders useful to us? So, it is as if they are the nails that give sorrow; hair is the memorial of viciousness. What?
Student: Should we follow all this in the limited or not?
Baba: What in the limited?
Student: Washing hair, cutting nails.

Website: www.pbks.info
Email: a1spiritual1@gmail.com

बाबा – ये हद की ही तो बात है। ये भक्तिमार्ग के हद की तो बात है। वो हद का खून है, ये हमारे संकल्पों का बेहद का खून है। बेहद का खून अगर संकल्पों का बेहद खून हम रोक दें, संकल्पों को जाम कर दें, हम बिन्दु रूप में टिक जायें तो ये गंदा खून बाहर आयेगा? जिस गंदे खून से बिच्छू–टिंड़न बच्चे पैदा हो रहे हैं वो गंदा खून बाहर आयेगा? जो मनुष्य की स्त्री और पुरूष की शक्ति क्षीण होती है विकारों में जाने से वो नाली में चली जाती है, गंदा खून बन जाता है, गंदगी बन जाती है वो फायदेमंद चीज़ है या नुकसानदायक चीज़ है? वो तो बहुत भारी नुकसान हो गया। इसलिए वो गंदगी नहीं निकालना चाहिए जब हमारे ऊपर बृहस्पति की दशा बैठ रही है। अगर गंदगी निकलती है तो साबित होता है कि हमारे ऊपर राहु की दशा है या बृहस्पति की दशा है? किसकी दशा है? राहु की दशा है।

Baba: This **is** about the limited. This is about the limited [traditions] of the path of *bhakti*. That is the limited blood; this is the unlimited blood of our thoughts. If we stop the unlimited blood of thoughts, if we jam our thoughts, if we become constant in the form of the point, will this dirty blood come out? Will the dirty blood that is giving birth to children like scorpions and spiders come out? The power of human beings, the power that a woman and a man lose because of indulging in vices, [does that power] go into drain, does it turn into impure blood, does it becomes dirt … is it something beneficial or harmful ? That is a great loss. This is why we should not take out that dirt when we are under the influence of Jupiter (*Brihastpati*). If the dirt comes out, does it prove that we are under the planetary influence of Rahu[12] or Brihastpati? Under whose influence are we? We are under the influence of Rahu. (Concluded.)

[12] Name of a demon supposed to seize the sun and the mon in his mouth and so to create eclipses